International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website: https://ijaar.co.in/*
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

Original Article

समाजवाद : अर्थ एवं स्वरूप

डॉ. अमरदीप रजक

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग

किशोरी सिंहा महिला महाविद्यालय औरंगाबाद,

मगध विश्वविद्यालय, गया, बिहार.

Manuscript ID:
IJAAR-130404
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 4
March – April 2026
Pp. 16 - 19

Submitted: 11 Feb.2026
Revised: 27 Feb. 2026
Accepted: 2 Mar. 2026
Published: 10 Mar. 2026

Corresponding Author:
डॉ. अमरदीप रजक

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.19126664

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.19126664

सारांश:

समाजवाद आधुनिक राजनीतिक एवं आर्थिक विचारधाराओं में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह ऐसी व्यवस्था का समर्थन करता है जिसमें उत्पादन के साधनों पर समाज या राज्य का नियंत्रण हो तथा समाज के सभी व्यक्तियों को समान अवसर और संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण प्राप्त हो। समाजवाद का मूल उद्देश्य आर्थिक असमानता को समाप्त करना और सामाजिक न्याय की स्थापना करना है। औद्योगिक क्रांति के बाद उत्पन्न सामाजिक-आर्थिक विषमताओं ने समाजवाद को एक सशक्त वैचारिक आंदोलन के रूप में विकसित किया। इस विचारधारा ने पूँजीवादी व्यवस्था की आलोचना करते हुए श्रमिकों के अधिकार, समानता और कल्याण को प्रमुखता दी।

*समाजवाद केवल एक आर्थिक प्रणाली नहीं है बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक-राजनीतिक दर्शन भी है, जो समाज में सहयोग, समानता और सामूहिक कल्याण के सिद्धांतों को महत्व देता है। विभिन्न विचारकों जैसे **Karl Marx**, **Friedrich Engels**, **Robert Owen** और **Harold Laski** ने समाजवाद के सिद्धांतों को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।*

वर्तमान समय में भी समाजवाद सामाजिक न्याय, कल्याणकारी राज्य और लोकतांत्रिक समानता की अवधारणा से जुड़ा हुआ है। यह लेख समाजवाद के अर्थ, उत्पत्ति, प्रमुख विशेषताओं तथा उसके स्वरूप का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

कीवर्ड: समाजवाद, समानता, सामाजिक न्याय, सामूहिक स्वामित्व, कल्याणकारी राज्य.

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

डॉ. अमरदीप रजक. (2026). समाजवाद : अर्थ एवं स्वरूप. International Journal of Advance and Applied Research, 13(4), 16 – 19. https://doi.org/10.5281/zenodo.19126664

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

प्रस्तावना:

मानव समाज के विकास के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विचारधाराएँ भी विकसित हुई हैं। इनमें समाजवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसने आधुनिक विश्व के राजनीतिक और आर्थिक ढाँचे को गहराई से प्रभावित किया है। समाजवाद का मूल उद्देश्य समाज में व्याप्त आर्थिक असमानताओं को समाप्त करना और संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित करना है।

औद्योगिक क्रांति के बाद यूरोप में पूँजीवाद के विस्तार के साथ-साथ श्रमिकों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी। कारखानों में लंबे समय तक काम, कम मजदूरी और असुरक्षित कार्य-परिस्थितियाँ आम बात थीं। इन परिस्थितियों ने समाज में असंतोष और असमानता को बढ़ाया। इसी पृष्ठभूमि में समाजवाद एक वैचारिक आंदोलन के रूप में उभरा जिसने पूँजीवादी व्यवस्था की आलोचना करते हुए समानता और सामाजिक न्याय की मांग की।

समाजवाद का विकास केवल आर्थिक कारणों से नहीं हुआ बल्कि यह नैतिक और सामाजिक मूल्यों से भी जुड़ा हुआ है। यह विचारधारा मानती है कि समाज के सभी व्यक्तियों को समान अवसर प्राप्त होने चाहिए और समाज की समृद्धि का लाभ सभी को मिलना चाहिए।

समाजवाद का अर्थ:

समाजवाद शब्द अंग्रेज़ी के *Socialism* से बना है, जिसका मूल लैटिन शब्द *Socius* है, जिसका अर्थ है – "साथी" या "सामाजिक सहयोग"। इस प्रकार समाजवाद का मूल भाव सहयोग और सामूहिकता में निहित है।

राजनीतिक विचारक **Harold Laski** के अनुसार समाजवाद वह व्यवस्था है जिसमें उत्पादन के साधनों पर समाज का नियंत्रण होता है और उनका उपयोग समाज के कल्याण के लिए किया जाता है।[1]

इसी प्रकार **George Bernard Shaw** ने समाजवाद को ऐसी व्यवस्था बताया है जिसमें निजी स्वार्थ के स्थान पर सामाजिक हित को प्राथमिकता दी जाती है।[2]

समाजवाद का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि समाज के सभी वर्गों को आर्थिक और सामाजिक रूप से समान अवसर प्राप्त हों।

समाजवाद की उत्पत्ति और विकास:

समाजवाद की जड़ें प्राचीन काल तक जाती हैं, परंतु आधुनिक समाजवाद का विकास मुख्यतः उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप पूँजीपतियों और श्रमिकों के बीच आर्थिक विषमता बढ़ने लगी।

इस स्थिति के विरोध में कई विचारकों ने समाजवादी सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। प्रारंभिक समाजवादी विचारकों में **Robert Owen**, **Charles Fourier** और **Henri de Saint-Simon** प्रमुख थे।

बाद में **Karl Marx** और **Friedrich Engels** ने वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसने समाजवाद को एक संगठित वैचारिक रूप प्रदान किया।[3]

समाजवाद की प्रमुख विशेषताएँ:

(1) सामूहिक स्वामित्व: समाजवाद की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उत्पादन के साधनों जैसे भूमि, उद्योग और संसाधनों पर समाज या राज्य का स्वामित्व होता है।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

(2) आर्थिक समानता: समाजवाद आर्थिक असमानताओं को समाप्त करने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य यह है कि समाज के सभी लोगों को जीवन की आवश्यक सुविधाएँ समान रूप से प्राप्त हों।

(3) सामाजिक न्याय: समाजवाद सामाजिक न्याय की स्थापना पर बल देता है। यह व्यवस्था समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के कल्याण को प्राथमिकता देती है।

(4) सहयोग की भावना: समाजवाद प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।

(5) कल्याणकारी राज्य: समाजवाद के अंतर्गत राज्य नागरिकों के कल्याण के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था करता है।

समाजवाद के विभिन्न स्वरूप:

समाजवाद एक व्यापक विचारधारा है जिसके कई स्वरूप विकसित हुए हैं।

(1) यूटोपियन समाजवाद: यह समाजवाद का प्रारंभिक रूप था जिसमें आदर्श समाज की कल्पना की गई थी।

(2) वैज्ञानिक समाजवाद: यह सिद्धांत **Karl Marx** और **Friedrich Engels** द्वारा प्रतिपादित किया गया।

(3) लोकतांत्रिक समाजवाद: इसमें लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से समाजवादी सिद्धांतों को लागू करने पर बल दिया जाता है।

(4) राज्य समाजवाद: इसमें राज्य उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण रखता है और आर्थिक गतिविधियों का संचालन करता है।

समाजवाद का महत्व:

समाजवाद ने आधुनिक समाज में सामाजिक न्याय और समानता की अवधारणा को मजबूत किया है।

1. *आर्थिक असमानता को कम करने में सहायता*
2. *श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा*
3. *सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था*
4. *कल्याणकारी राज्य की स्थापना*

समाजवाद की आलोचना:

हालाँकि समाजवाद के अनेक लाभ हैं, लेकिन इसकी कुछ आलोचनाएँ भी की जाती हैं।

1. व्यक्तिगत स्वतंत्रता में कमी
2. उत्पादन क्षमता में कमी
3. अत्यधिक राज्य नियंत्रण

इसके बावजूद समाजवाद आज भी कई देशों की नीतियों और सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों को प्रभावित करता है।

निष्कर्ष:

समाजवाद एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक विचारधारा है जिसका मूल उद्देश्य समाज में समानता और सामाजिक न्याय की स्थापना करना है। यह व्यवस्था उत्पादन के साधनों के सामूहिक स्वामित्व और संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण पर आधारित है।

यद्यपि समाजवाद के विभिन्न स्वरूप और व्याख्याएँ हैं, फिर भी इसका मूल लक्ष्य समाज के सभी वर्गों के कल्याण को सुनिश्चित करना है। आधुनिक विश्व में भी समाजवाद की

अवधारणा कल्याणकारी राज्य और सामाजिक सुरक्षा की नीतियों के माध्यम से प्रासंगिक बनी हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. ए. अप्पादोराय, द *सब्सटेंस ऑफ पॉलिटिक्स*, नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005, पृ. 46।
2. हैरोल्ड लास्की, *ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स*, लंदन: जॉर्ज एलेन एंड अनविन, 1938, पृ. 115।
3. कार्ल मार्क्स एवं फ्रेडरिक एंगेल्स, *कम्युनिस्ट घोषणापत्र*, लंदन, 1848, पृ. 25।
4. जॉर्ज एच. साबिन, *हिस्ट्री ऑफ पॉलिटिकल थ्योरी*, नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2008, पृ. 507।
5. उर्मिला शर्मा एवं एस. के. शर्मा, *पॉलिटिकल थॉट*, नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स, 2010, पृ. 214।